

*Philosophy Today*

2021, Vol. 2 | Issue-2

<https://philosophytoday.in>

COVID -19 वर्तमान अषुभ के दर्शन की भूमिका

Dr. Kiran Baderia¹

सार :

COVID -19 वायरस आज भारत समेत दुनिया भर में स्वास्थ्य और जीवन के लिए गंभीर चुनौती बनकर खड़ा है। अब पूरी दुनिया में इसका असर भी दिखने लगा है। गौतम बुद्ध को जब ज्ञान की प्राप्ति हुई तब उन्होंने इस संसार को चार आर्य सत्य के ज्ञान का प्रकाश जगत में प्रसारित किया जिसमें पहला आर्य सत्य है, "संसार दुखों से भरा पड़ा है। चारों तरफ दया ही दुख है। यदि सुख भी प्राप्त होता है तो वह भी दुखांत होगा, क्योंकि उस सुख को खो जाने का डर मनुष्य के मन में हमेशा से ही विद्यमान रहा है। इसलिए गौतम बुद्ध के अनुसार यह संसार दुखमय है। यह कटु सत्य है कि हर एक मनुष्य को जीवन में दुख सहन करना ही पड़ता है, कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जिसे कभी भी कोई दुख न सहन करना पड़ा हो। प्रत्येक प्राणी हर पल किसी न किसी दुख से आवृत्त रहता है अतः कहाँ जा सकता है कि जगत में अषुभ की उपस्थिति दिखाई पड़ती है। कोरोना नामक यह अषुभ पूरी दुनिया को हानि पहुँचा रहा है। इस महामारी की दूसरी लहर ने कई लोगों को काल के गर्त में पहुँचा दिया है।

षब्द कुंजी :- अषुभ, महामारी, नैतिक, कर्म

¹ Vikram University, Ujjain (M.P.)

baderiakiran@gmail.com

जीवन के अनुभवों की बात की जायें तब हम जीवन में अशुभ की प्रबलता पाते हैं, विष्व अशुभ के अधीन हैं। यदि अशुभ को विष्व का आवष्यक अंग माना जाये तो यह अतिथोक्ति नहीं होगी; क्योंकि विष्व इन दिनों इतिहास की सबसे बड़ी महामारी का सामना कर रहा है।

COVID -19 वायरस आज भारत समेत दुनिया भर में स्वास्थ्य और जीवन के लिए गंभीर चुनौती बनकर खड़ा है। अब पूरी दुनिया में इसका असर भी दिखने लगा है।

वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ आवागमन और संचार व्यवस्था संगम हुई हैं, वहीं आपसी संपर्क के बढ़ने से पूरा विष्व इस गंभीर बीमारी के सुभेद्य हो गया है। विष्व स्वास्थ्य संगठन **World Health Organisation (WHO)** के अनुसार लगभग 70 देशों में 95000 से अधिक लोग कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए हैं।

“कोरोना वायरस (**COVID -19**) का प्रकोप तब सामने आया जब 31 दिसंबर 2019 को चीन के हुयेई प्रांत के वुहान शहर में अज्ञात कारण से निमोनिया के मामले में हुई अत्यधिक वृद्धि के कारण विष्व स्वास्थ्य संगठन को सूचित किया गया।”² तत्पश्चात् विष्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा इसे वैश्विक स्वास्थ्य संगठन की ओर से इसे वैश्विक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया गया। शीघ्र ही यह बीमारी चीन और दुनिया के बाकी हिस्सों में फैल गई। पहले इस वायरस को **Sars – Cov- 2** नाम दिया गया जिसका बाद में **COVID -19** नाम से अधिकाधिक नामांकरण किया गया।

यदि कोरोना महामारी पर विचार किया जाये तो यह इस समय सम्पूर्ण जगत पर अशुभ बनकर छाया हुआ है। अशुभ का अर्थ ही है, शुभ का अभाव। मृत्यु

अशुभ का उदाहरण है क्योंकि इसमें शुभ का अभाव है। प्रो. डी. एम. एडवर्ड ने अशुभ को परम मूल्यों का विरोधी बतलाया है। उन्होंने कहाँ है कि “विष्व में कम से कम चार प्रकार के अशुभ निहित हैं – दुख, असत्य, कुरूपता और पाप। इन्हें चार परम मूल्यों – सुख, सत्य, सौंदर्य और शुभ का सक्षम विरोधी माना जा सकता है।”³

मनुष्य के दुखों का मूल कारण अशुभ को भी माना जाता है। यदि विष्व में अशुभ का राज्य नहीं होता तो मानव जीवन सुखमय होता। गौतम बुद्ध को जब ज्ञान की प्राप्ति हुई तब उन्होंने इस संसार को चार आर्य सत्य के ज्ञान का प्रकाश जगत में प्रसारित किया जिसमें पहला आर्य सत्य है, “संसार दुखों से भरा पड़ा है। चारों तरफ दया ही दुख है। यदि सुख भी प्राप्त होता है तो वह भी दुखांत होगा, क्योंकि उस सुख को खो जाने का डर मनुष्य के मन में हमेशा से ही विद्यमान रहा है। इसलिए गौतम बुद्ध के अनुसार यह संसार दुखमय है। यह कटु सत्य है कि हर एक मनुष्य को जीवन में दुख सहन करना ही पड़ता है, कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जिसे कभी भी कोई दुख न सहन करना पड़ा हो। प्रत्येक प्राणी हर पल किसी न किसी दुख से आवृत्त रहता है अतः कहाँ जा सकता है कि जगत में अशुभ की उपस्थिति दिखाई पड़ती है।

कोरोना नामक यह अशुभ पूरी दुनिया को हानि पहुँचा रहा है। इस महामारी की दूसरी लहर ने कई लोगों को काल के गर्त में पहुँचा दिया है। भारत वर्ष में कोरोना की दूसरी लहर ने काफी तबाही मचाई है। बहुत से घर बेघर हो गये हैं। लोगों ने अपने परिजनों को हमेशा हमेशा के लिए खो दिया है। वर्तमान समय में जहाँ भी दृष्टिपात करते हैं, वहीं पर अशुभ का साम्राज्य फैला हुआ है। प्लेटो ने इस विष्व

की बुराईयों की व्याख्या सत्ता (Being) के साथ असत्ता (Non Being) जिसे आगे चलकर उसने भूत (Matter) के नाम से भी पुकारा है, की कल्पना करके किया है। सत्ता (Being) को प्लेटो ने पूर्ण (Perfect) और षुभों का उद्गम स्थान माना और असत्ता (Non Being) को उसने विष्व की सभी बुराईयों का कारण बताया है।

अरस्तु के दर्शन में भी हमें वस्तु (Matter) और आकार (Form) का वर्गीकरण मिलता है। अरस्तु का कहना है कि विष्व विकास की प्रारंभिक अवस्था में विष्व आकार की ओर बढ़ता जा रहा है और ज्यों-ज्यों यह आकार के समीप पहुँचता जा रहा है त्यों-त्यों विष्व की बुराईयां, इसके अषुभ घटते जा रहे हैं। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि अरस्तु ने भी सांसारिक अषुभ का कारण भूत को ही माना है।

यदि वर्तमान परिस्थिति को अरस्तु के कथन के संदर्भ में देखा जाये तब यह कथन सत्य प्रतीत होता है। मनुष्य जब जड़ पदार्थों को प्राप्त करने की लालसा में जय सत् तत्व को ही विस्मृत कर देता है तब जगत में अषुभ ही उपस्थित होता है। हम कह सकते हैं कि जगत में जब सत् की मात्रा ज्यादा एवं भूत की उपस्थिति कम तब संसार में अषुभ नगण्य हो जाता है।

सांख्य दर्शन में भी कहा गया है कि प्रकृति त्रिगुणात्मक है, सत्त्व, रजस, तमस। यह तीनों प्रकृति में साम्यावस्था में जब बने रहते हैं तब जगत व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहती है। यदि प्रकृति में किसी भी एक की अवस्था बदलती है या कह सकते हैं कि एक तत्व दूसरे तत्व पर अपना प्रभाव ज्यादा दिखाता है तब यह साम्यावस्था बिगड़ जाती है एवं प्रकृति में हलचल पैदा होती है।

वर्तमान समय में हम देख सकते हैं कि प्रकृति का दोहन हो रहा है। मनुष्य स्वयं के स्वार्थ के लिए प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है। यह स्वाभाविक है यदि प्रकृति की प्रवृत्ति में छेड़छाड़ की जायेगी तब प्रकृति भी अपना रूप दिखाती है। जब भी प्रकृति की साम्यावस्था भंग होगी तब प्रकृति में हलचल पैदा होगी जो मनुष्य के लिए हितकारी नहीं होगा। क्योंकि प्रकृति का स्वरूप है "देना", आप जो प्रकृति को दोगे वहीं आपको वापस मिलेगा। अषुभ के प्रकार पर यदि चर्चा की जाये तब हम मुख्यतः दो प्रकार को अषुभ को मानते हैं। (1) प्राकृतिक अषुभ और (2) नैतिक अषुभ।

(1) प्राकृतिक अषुभ :-

इस अषुभ को कहते हैं जो प्रकृति में विद्यमान है। भूकम्प, बाढ़, मृत्यु, रोग, साँप, अभाव, अज्ञान आदि प्राकृतिक अषुभ के उदाहरण कहे जा सकते हैं। प्रकृति में ऐसी वस्तुओं का अस्तित्व है जो जीवों के लिए दुःखद प्रतीत होते हैं। प्राकृतिक अषुभ से सिर्फ मानवों को ही दुःख नहीं होता है बल्कि अन्य जीवों को भी कष्ट पहुँचता है।

(2) दूसरी ओर नैतिक अषुभ उन अषुभों से लेते हैं जो मानव के कार्य-कलापों से उत्पन्न होते हैं।

मनुष्य में संकल्प स्वातंत्र्य है जिसके अनुचित प्रयोगों के फलस्वरूप नैतिक का अषुभ का जन्म होता है। अर्थात् जब मनुष्य अनैतिक कर्म की ओर प्रवृत्त होता है तब वह नैतिक अषुभ कहलाता है। मानव स्वयं के स्वार्थ के लिए अनैतिक कर्म करता है, यह "कोरोना" नैतिक अषुभ का ही उदाहरण है। कोरोना एक वायरस है जिसे प्रयोगशाला में बनाया गया है। यह अनैतिक कर्म मनुष्य के द्वारा ही किया जाता

हैं। कारण बिल्कुल स्पष्ट हैं। स्वयं का साम्राज्य बढ़ाने के लिए यह कहाँ जा सकता है कि स्वयं की ईच्छापूर्ति के लिए क्योंकि वायरस का निर्माण प्रयोगशाला में किसी उद्देश्य से ही किया होगा।

लेकिन मनुष्य हमेशा यह भूल जाता है कि हर क्रिया के विपरित प्रतिक्रिया भी होती है। हम जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल हमें भी मिलेगा। यदि आप कोई अनैतिक कर्म किसी को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से करते हो तब आप के साथ भी अनैतिक ही होगा।

कोरोना वायरस एक अत्यधिक संक्रामक रोग है। इस बिमारी से पीड़ित मामले की जानकारी दिसम्बर 2019 में प्राप्त हुई एवं 11 March 2020 को इसे महामारी घोषित किया गया। इस महामारी के कारण होने वाली मौतों और अस्वस्थता के परिणामस्वरूप समाज में भय, तनाव और आषंका बढ़ गई है। रोग प्रतिरोधक क्षमता और जीवन शैली कारक बारीकी से आपस में जुड़ गए हैं। अध्ययन से पता चला है कि जब हम तनावपूर्ण अतृप्त स्थितियों में होते हैं उस वक्त हमारी रोग प्रतिरोधक प्रणाली संकट में डालने लगती है और हम संक्रमण के शिकार हो जाते हैं। इस प्रकार योग जैसा प्रयास जो मनोवैज्ञानिक तनाव को कम करता है, रोग प्रतिरोधक प्रणाली को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है जिससे संक्रमण फैलने की संभावना कम होती है और जटिलताओं से बचा जा सकता है। योग आधारित जीवन शैली में भारतीय प्राचीन धर्मग्रंथों से सही जीवन यापन की अवधारणाओं पर आधारित जीवनशैली में सुधार शामिल है। योग सिद्धांतों के अनुसार “जीवनशैली के चार घटक हैं – आहार, शारीरिक गतिविधि, आदतें और भावनात्मक कल्याण। जीवनशैली के इन कारकों में अनियमितता को एक प्रमुख कारक माना गया है जो रोग प्रतिरोधक प्रणाली की पूर्णता को प्रभावित

करता है और संक्रमण का जोखिम बढ़ाता है।” उचित जीवनशैली के पालन के अभाव (जंक फूड का सेवन, शारीरिक निष्क्रियता, अनियमित दिनचर्या, व्यसन) का मस्तिष्क के एक विशेष प्रकार के सोचने की गति से पता लगाया जा सकता है। इसलिए, योग-आधारित जीवन शैली की सम्पूर्ण अवधारणा मस्तिष्क की गति को कम करना है। (शारीरिक मुद्राओं के अभ्यास के साथ – साथ अपनी जिम्मेदारियों को समझना, श्वास नियंत्रण, भजन और विश्राम की तकनीक, और इस प्रकार इसे कुशलता से प्रबंधित किया जाये ताकि व्यक्ति उचित जीवनशैली का पोषण करने में सक्षम हो। मन को शांत करने से होमोस्टैसिस और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाली प्रणाली को गहरा आराम मिलता है और उसका कायाकल्प होता है। पतंजलि के योगसूत्र में योग साधना के अनुसार सांस लेने के लगातार अभ्यास की तकनीक की विस्तृत अध्ययन मिलता है। इन अभ्यास से फेफड़ों में वायु प्रवाह, वायु क्षमता, सहनशक्ति और कार्यक्षमता को घटाता है।

वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए अब मनुष्य को समझना चाहिये कि जीवन से हम नैतिक कर्म करें, व्यवहार में नैतिक आचरण अपनाये, अपने कर्मों को शुद्ध बनाये क्योंकि कुछ भी हमेशा के लिए नहीं सब कुछ नित्य नहीं है। जड़ पदार्थ नित्य हो नहीं सकते मनुष्य इन भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनैतिक कर्म करने से भी नहीं चुकता है। इन कर्मों के किये जाने पर उन्होंने जो सुख मिलता है वह भी क्षणिक ही होता है। क्योंकि अनैतिक द्वारा किया गया कर्म कभी भी सुख को प्रदान नहीं करेगा एवं परिणाम दुखद ही होगा। इस दुख से निवृत्ति पाने के लिए आवश्यक है उचित मार्ग। मनुष्य सुख की कामना ही तो करता है लेकिन अज्ञानवश वह सुख की प्राप्ति के लिए जो नहीं है उसे “है” समझकर सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ

कर्मों में नष्ट कर देता हैं। ज्ञान प्राप्ति पर वह सन्मार्ग पर निकल पड़ता हैं।

स्वामी विवेकानन्द जी का कथन हैं कि “संसार में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं हैं जिसे केवल शुभ या केवल अशुभ ही कहा जा सके। जो आज शुभ हैं, वही कल अशुभ हो सकता हैं। ऐसा भी हो सकता हैं कि जो एक के लिए शुभ हो वही दूसरे के लिए अशुभ हो। इस महामारी के दौर से हम सभी गुजर रहे हैं। लेकिन फिर भी इस अशुभ ने हमें कुछ सिखाया ही हैं। लोगो को स्वच्छता के प्रति जागरूक कराया हैं। असमय मृत्यु की अधिकता से मनुष्य सोचने पर मजबूर हो गया हैं कि कुछ भी स्थायी नहीं हैं इसलिए हम जैसे भी हैं उस समय को जियें। आपसी संबंध में मधुरता लाये आदि। मनुष्य प्रकृति की ओर भी संवेदनशील हुआ हैं, क्योंकि लाकडाउन के समय प्रकृति से प्रदूषण की मात्रा बहुत कम हो गई थी। प्रदूषण की कमी से मनुष्यों ने प्राकृतिक नजारों को भी देखा हैं। नदियाँ, तालाब, वायु इस लाकडाउन से अपनी पूर्वावस्था में आ सकें अर्थात् शुद्ध वातावरण। अर्थात् कहा जा सकता हैं कि मनुष्य के जीवन में जब भी संघर्ष या अशुभ आयेगा त बवह मनुष्य को और भी मजबूत बनाता हैं। हर संघर्ष जीवन की एक नई राह खोलता हैं। अशुभ परिस्थितियों से कभी भी घबराना नहीं चाहिये बल्कि उस परिस्थिति से ज्ञान प्राप्त करके आगे बढ़ना चाहिये। दर्शन का ज्ञान हमारे लिए अत्यंत आवश्यक हैं, यही दर्शन की महत्ता हैं।

- धर्म दर्शन की रूपरेखा, डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिंह, पृ. क्रं. 187।
- योजना पत्रिका मई 2021, पृ. 15।
- स्वामी विवेकानन्द का कर्मयोग, तृतीय खण्ड।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

- The Hindu, The Indian express, Business Line, 5 March 2020.
- D. M. Edwards – The Philosophy of Religion, P. N. 239